P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-IV*December-2014
E: ISSN NO.: 2349-980X

सूचना तकनीक और पत्रकारिता का बदलता स्वरूप

हेमांशु सेन
सह आचार्य,
हिन्दी विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

Abstract

पत्रकारिता को समाज का चतुर्थ स्तम्भ कहा जाता है। सूचनाओं का प्रसारण कर विसंगतियों को उ्घाटित करना, सद्मूल्यों को प्रतिष्ठित करना, मानवता के उत्थान में सहायक सभी घटनाओं, क्रिया–कलाओं को प्रतिष्ठित करना, मनुष्य में नैतिकता और मानवीय मूल्यों का संचार करना, आदि पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त हैं। व्यावसायिकता और उपभोक्तावादी संस्कृति के इस युग में पत्रकारिता के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। अपने मूल सिद्धान्तों को संरक्षित रखते हुए भी उसका स्वरूप व्यावसायिक हो गया है। अब पत्रकारिता केवल समाज सेवा न रहकर एक उच्चस्तरीय जीविकोपार्जन का माध्यम भी बन गया है। कागज कलम के विकास से लेकर टाइपराइटर, प्रिंटिंग प्रेस, लेजर प्रिंटर, कम्प्यूटर, डिजिटल कैमरा तथा इण्टरनेट, सोशल वेबसाइट्स आदि के अविष्कार से समाचारों की प्रामाणिकता, प्रसारण गति आदि पर अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा है। ई–अखबार का आगमन पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से युगान्तकारी है। सूचना क्रान्ति के इस युग में तकनीक के क्षेत्र में हुए अनुसंधान और परिवर्तन का पत्रकारिता के स्वरूप पर प्रभाव पड़ा है। पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप व्यावसायिक तो है परन्तु अपने मूल सिद्धांतों की रक्षा करता है। ैवबपंस ैपजमे के जरिये जनसामान्य से जुड़ी खबरें आसानी से प्रसारित हो जाती है। समाचार पत्र, न्यूज चैलन, आकाशवाणी के चैनलों की संख्या बहुत हो गयी है इनके संवाददाताओं की संख्या के कारण छोटे से छोटे स्थान पर घट रही घटना के प्रसारित होने की संभावना बढ़ गयी है यदि किन्हीं कारणों से सूचना प्रसारित नहीं हुई तो 'सोशल साइट्स' के जरिये कोई भी सामान्य जागरूक व्यक्ति इसका प्रसारण कर देता है। तात्पर्य यह है कि तकनीक के विकास के साथ–साथ पत्रकारिता के गति और स्वरूप में अभूतपूर्व विकासात्मक परिवर्तन हुआ है।

मुख्य शब्द : पत्रकारिता, ज्ञान – विज्ञान, इलेक्ट्रानिक, संपादित

उद्देश्य

सभ्य समाज की जीवनचर्या का प्रारम्भ सुबह की चाय के साथ समाचार पत्र पढ़ने से हुआ करता था । आज भी सामान्य तौर पर यह सत्य प्रतीत होता है परन्तु घण्टों पुरानी खबरें पढ़कर नयी तकनीक से युक्त, विकसित समाज संतुष्ट नहीं होता वरन टी0वी0, रेडियों, इण्टरनेट के माध्यम से क्षण प्रतिक्षण की खबर रखता है। इण्टरनेट की दुनिया में यहॉ घटना घटी वहॉ क्षण मात्र में विश्व स्तर पर सूचना का प्रसारण हुआ। जिस प्रकार पौराणिक कथाओं में देवर्षि नारद क्षण भर एक सूचना का त्रिलोक में प्रसारण कर देते थे, वैसे ही आज तकनीकी विकास के कारण एक स्थान पर घटी घटना क्षण भर में O.B. वैन, YOUTUBE, SOCIAL SITES, NEWS AGENCIES के संवाददाताओं द्वारा क्षण भर में दुनियां भर में प्रसारित हो जाती है। इस शोध पत्र 'सूचना तकनीक ओर पत्रकारिता का बदलता स्वरूप' का उद्देश्य समाचार प्रसारण की बदलती प्रक्रिया और त्वरित गति को समेकित रूप से उद्घाटित करना है।

परिचय

पत्रकारिता सामान्य जनता की अभिरूचि एवं आवश्यकता के अनुरूप सूचना देने, उसको जाग्रत करने और चेतन करने के साथ – साथ उसके मनोरंजन का कार्य भी करती है। वस्तुतः ''पत्रकारिता एक ऐसा विषय है, जिसका क्षेत्र और स्वरूप अत्यंत व्यापक है। जीवन का कदाचित ही कोई ऐसा भाग हो, जो पत्रकारिता की पहुँच से परे हो। जन जन की हर आह और हर संवेदना की गहरी पकड़ पत्रकारिता रखती है''।[1] डॉ॰ कृष्ण बिहारी मिश्र की दृष्टि में ''पत्रकारिता वह विधा है जिसमें पत्रकारों के कार्यो, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है। जो अपने युग और अपने संबन्ध में लिखा जाय, वही पत्रकारिता है।''[2] डॉ॰ अर्जुन तिवारी के अनुसार ''समय

और समाज के सन्दर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं।''[3]

प्रारम्भ में पत्रकारिता का अभिप्राय समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों एवं सूचना से थापरन्तु धीरे–धीरे इसका विस्तार इलेक्ट्रॉनिक संयत्रों तक पहुंचा और आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट आदि क्षेत्र भी पत्रकारिता से सम्बद्ध हो गए।इलेक्ट्रानिक पत्रकारिता के इस वृहत रूप को परिभाषित करते हुए डॉ॰अर्जुन तिवारी लिखते हैं–''ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणिओं के साथ शब्द ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन – जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।''[4]

पत्रकारिता के द्वारा प्रसारित होने वाले समाचार अथवा सूचना जिस चरणबद्ध प्रक्रिया से संकलित, व्यस्थित और संपादित होकर प्रसारित होते हैं उस प्रक्रिया के किसी भी चरण होने वाला तकनीकी अविष्कार इस सम्पूर्ण सूचना तन्त्र को प्रभावित करता है। यह अविष्कार चाहे मुद्रण स्तर पर हों अथवा संकलन स्तर पर, संकलन के पश्चात् केन्द्रीय कार्यालय तक भेजने के स्तर पर हो अथवा नवीन तकनीक का प्रयोग कर प्रसारण के स्तर पर, मूलतः तकनीक का विकास पत्रकारिता को सहज, सरल, यथार्थ, त्वरित और प्रभावी बना रहा है। साहित्य के सामान पत्रकारिता का कार्य भी सत्य कि खोज, सत्य की प्रतिस्थापना और लोक मंगल है। पत्रकारिता को आदर्श, सत्य, युग बोध और निष्पक्षता जैसे अनेकानेक मूल्यों से युक्त करने वाले सम्पादकाचार्य पंडित बाबूराव विष्णु पराड़कर की दृष्टि में 'पत्रकारिता यानि तलवार की धार पर धावना है'।

वस्तुतः पत्रकारिता सूचना का फैलाव है। सूचना एकत्र करने, व्यवस्थित करने तथा सामान्य जनता तक उसका प्रसार करने की प्रक्रिया ही पत्रकारिता है। इस प्रक्रिया के समस्त में किसी भी चरण पर होने वाला तकनीकी विकास सूचना के स्वरूप, गुणवत्ता और गति पर आवश्यक रूप से प्रभाव डालता है सूचना का संकलन, व्यवस्थापन प्रसारण मूलतः पत्रकारिता के मुख्य चरण हैं जिनमें होने वाला तकनीकी विकास इसके स्वरूप को प्रभावित करता है। पत्रकारिता के मुख्य रूप से दो माध्यम हैं –

1. प्रिंट माध्यम
2. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम

स्पष्ट है कि पत्रकारिता के लिए विभिन्न माध्यमों से सूचना एकत्र करने और प्रसारित करने का कार्य होता है।जैसे –जैसे इन माध्यमों की तकनीक में परिवर्तन हुआ वैसे – वैसे पत्रकारिता का स्वरूप बदला । सूचना 'इनफार्मेशन' शब्द की उत्पत्ति 'इनफारमीतिक' शब्द से हुई है जिसका प्रारम्भिक अर्थ कंप्यूटर विज्ञान और उससे सम्बंधित तकनीकी या उपग्रह संचार से जुड़े हुए संचार माध्यमों की विविध प्रक्रियाओं तक सीमित था। बाद में इस शब्द का अर्थ विस्तार हुआ, आज तो समाचार सूचनाओं के संकलन और प्रसारण के समस्त संसाधन इसके अंतर्गत समाहित हैं।प्रिंट माध्यम में हुये नवीन तकनीकी विकास ने सूचना संकलन एवं मुद्रण की दिशा में अभूतपूर्व विकासात्मक परिवर्तन किया। मानव जाति के ज्ञात इतिहास में सबसे पहले चीन में भोज पत्र पर कुछ सूचना अंकित की गयी थी। धीरे – धीरे टाइपराइटर, छापाखाना के विकास से सूचना छापने की प्रक्रिया शीघ्रता से और व्यवस्थित रूप से होने लगी थी। पत्रकारिता पर सूचना के प्रभाव पर 'डबलन सिटी यूनवर्सिटी' के मार्टिन जे मोलोनी ने बहुत श्रमसाध्य कार्य किया और इसे पॉच चरणों में विभक्त किया है –

(1) शोध (2) संचार (3) लेखन (4) संपादन (5) उत्पादन।

सूचना तकनीकी का प्रभाव समाचार अथवा सूचना के शोध, संचार, लेखन, संपादन, उत्पादन आदि प्रत्येक के क्षेत्र में पड़ता है। वस्तुतः सभ्यता और संस्कृति से जुड़े प्रत्येक परिवर्तन ने सूचना को प्रभावित किया है। सन् 1830 में अविष्कृत स्टीम प्रिटिंग प्रेस ने प्रिंट माध्यम में युगांतकारी परिवर्तन किया।आग जलाकर, ढोल बजाकर, घुड़सवार व कबूतर के द्वारा सूचना आदान – प्रदान करने वाली परंपरागत तकनीक में यातायात के साधनों के विकास का भी बहुत प्रभाव पड़ा।शिलालेख और भोजपत्रों पर संदेश अथवा सूचना लिखने की तकनीक में कागज और छापेखाने के आविष्कार के साथ परिवर्तन हुआ।यद्यपि यह सूचना तकनीक नहीं अपितु मूलभूत वस्तुओं के गुणात्मक विकास का परिवर्तन कहा जा सकता है।कागज ,यातायात के साधन और छापेखाने के बाद आया परिवर्तन पत्रकारिता के क्षेत्र में तकनीक का परिवर्तन कहा जायेगा। यह परिवर्तन जब मुद्रण क्षेत्र में भी हुआ तो उसने सूचना ग्रहण करने, छपने और उसके प्रसारण गति को अकल्पनीय रूप से बढ़ा दिया।

सत्यता, सामयिकता, निकटता, नवीनता, सुरूचि पूर्णता सामाचार की मुख्य विशेषताये हैं, तथा रोमांस, रहस्य, संघर्ष, ख्याति आदि से जुड़ी खबरें समाचार बन जाती हैं। अतः खबरों अर्थात् समाचार के संग्रहण, मुद्रण और प्रसारण की वह प्रत्येक तकनीक, जिसने समाचार के इन गुणों को और बढ़ाया है, उसे और प्रामाणिक बनाया है, पत्रकारिता को प्रभावित करती है। यद्यपि त्वरित सूचना आदान–प्रदान करने की परिकल्पना बहुत प्राचीन है और इसका प्रतीक है देवर्षि नारद। आजकल नारद मुनि के सामान अनेक समाचार पत्रों, समाचार ऐजेंसियों, चैनलों के संवाददाता इधर – उधर भ्रमण करते हैं। समाचार के लिए आवश्यक सूचनाओं का संकलन करते हैं। भारत की पहली समाचार एजेंसी 1910 में 'ऐसोसिएट प्रेस ऑफ इंडिया' बनी। फिर यहीं से 'न्यूज ब्यूरो'' प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया', यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया', हिंदुस्तान समाचार, यूनीवार्ता, भाषा, समाचार, संचार भारती तथा अन्य सरकारी माध्यम आये। समाचार ऐजेंसी का लाभ यह होता है कि इसके संवाददाता व्यवस्थित रूप से देश के हर कोने में तथा विदेशों में भी रहते हैं। वहॉ कि हर छोटी से छोटी परन्तु महत्वपूर्ण घटना को तुरंत संकलित करते हैं, पुनः उसको विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करते हुए अपने केंद्रीय कार्यायल तक भेजते हैं।

'द हिन्दू' पत्र के विशेष संवाददाता रॉय मैथयू ने ''विज्ञान एवं सूचना के प्रयोग का पत्रकारिता पर प्रभाव'' को स्वीकार करते हुए उसके अनेक सकारात्मक पक्षों का विश्लेषण किया है। प्रिंट माध्यम अर्थात् मुद्रण में हुए नवीन तकनीक के विकास ने सूचनाओं के छापने कि गति, संख्या और गुणवत्ता को अत्यधिक प्रभावित किया। स्टीम प्रिंटिग प्रेस फिर ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस, फोर कलर प्रिंटिंग प्रेस, वेब ऑफसेट प्रिंटिंग प्रेस ने आज समाचार छापने की गति, गुणवत्ता को कई गुना बढ़ा दिया है। 'द हिन्दू' के सन्दर्भ में मैथयू जी ने उल्लेख किया है की 'द हिन्दू' भारत का प्रथम

समाचार पत्र था जिसने 50 वें दशक में 'फाक्सिमाइल एडिशन' निकाला। पत्रकारिता की दुनिया में लगभग 1910 ई॰ से कंप्यूटर का प्रयोग होने लगा। नवीन तकनीक का प्रभाव यह है की जहाँ 70 के दशक में फोटोकॉम्पोजिंग तकनीक का प्रयोग कर एक मिनट में एक पेज छापने की गति थी, आज वेब ऑफसेट प्रिंटर द्वारा एक लाख कापी एक घंटे में प्रिंट हो जाती है। समाचार की प्रामाणिकता अर्थात् सत्यता किसी भी समाचार का सबसे पहला और आवश्यक तथ्य है। समाचार की यह प्रामाणिकता फोटो के द्वारा स्वयं सिद्ध हो जाती है, पहले संवाददाता को फोटो खींचने के लिए काबिल फोटोग्राफर की आवश्यकता होती थी। अब कैमरे के नवीन तकनीक जैसे डिजिटल कैमरे के विकास से संवाददाता सीधे तस्वीरों को न्यूज रूम तक भेज देता है। पुरानी तकनीक की 'वेट फोटोग्राफी' की तस्वीरों के निए उसे 'डार्क रूम' की आवश्यकता नहीं होती। आज सी॰सी॰टी॰वी॰ और 'हिडन कैमरे' के द्वारा स्टिंग ऑपरेशन अथवा सर्वेक्षण कर छुपे हुए रहस्यों को उद्घाटित कर पत्रकारिता के वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त किया गया है। यद्यपि कभी – कभी इन तकनीकों का दुरुपयोग भी दिखाई पड़ता है। परन्तु इसमें संदेह नहीं कि विकसित तकनीक के प्रयोग से पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकासात्मक परिवर्तन हुआ है।बंगारू लक्षमण का रिश्वत प्रकरण हो या नीरा राडिया केस, मुजफ्फरनगर दंगों में व्यक्तियों की संदिग्ध भूमिका हो अथवा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल के कार्य करने की नवीन शैली, इन नवीन तकनीकों के प्रयोग से पत्रकारिता प्रामाणिक, खोजी, सत्य उद्घाटित करने वाली और पत्रकारिता संबन्धी प्रक्रियाओं को कम से कम समय में पूरा करने वाली बनी है।

मुद्रण के क्षेत्र में कंप्यूटर के प्रयोग से पत्रकारिता के लिए सूचना अथवा समाचार छापना और उसका स्वरूप परिवर्तित करना बहुत सरल हो गया है। 'वर्ड प्रोसेसर' द्वारा लिखने की प्रक्रिया, चयन, अनुपयुक्त शब्दों को हटा देना बहुत आसान है। 'आर्काइव' में तथ्यों को व्यवस्थित रूप से संगृहीत किया जाता है जो आवश्यकता पड़ने पर मात्र एक क्लिक' में प्राप्त हो जाती हैं। पत्रकारिता के लिए यह एक बहुत आवश्यक कार्य है जो तथ्यों को पुरानी फाइलों से खोजकर निकालने का बड़ी लम्बी अवधि के कार्य को कुछ ही मिनटों में खत्म कर देती है। समाचार प्रसारण के क्षेत्र में पहले टेली प्रिंटर का प्रयोग होता था जो एक मिनट में 70 शब्दों को प्रसारित करते थे अब 3जी एवं 4जी तकनीक के बाद अप्रत्याशित एवं अत्यधिक तीव्र गति से इस संख्या में परिवर्तन आया है। 1996 ई॰ में यह गति लगभग 70 हजार शब्द प्रति मिनट अर्थात 56 के॰बी॰पी॰एस॰ थी जो बढ़कर अब करोड़ों शब्द प्रति मिनट हो गयी है।

संचार संकलन के क्षेत्र मैं 1996 ई॰ तक प्रेस रिलीज होता था, अब ईमेल के द्वारा यह कार्य क्षण भर में होता है। व्ठ वैन तथा मल्टीमीडिया ने इस क्षेत्र को अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया है, इंटरनेट ने पत्रकारिता कि दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। दुनिया के किसी कोने में घटी घटना पल भर में हर देश के टीवी, कंप्यूटर पर उपलब्ध होती है। कई बार तो संवाददाता से पहले 'इंटरनेट' के सोशल साइट्स, यू ट्यूब, फेसबुक, ट्वीटर, आरकुड, व्हाट्स ऐप, चैट ऑन आदि पर घटना के विवरण अपलोड हो जाते हैं जो घटना से प्रभावित या समीपस्थ व्यक्ति कर देता है। वह संवाददाता नहीं होता परन्तु तथ्यों का प्रसारण कर देता है, वर्तमान समय में समाचार पत्रों ने अपना 'नेट संस्करण' भी जारी कर दिया है। कंप्यूटर क्रांति ने पत्रकारिता के क्षेत्र को अप्रत्याशित रूप से प्रभावित किया, हिंदी विडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रथम प्रयास श्री विनीत नारायण द्वारा निर्मित ''कालचक्र'' है।

15 अगस्त 1995 ई॰ को आये 'विदेश संचार निगम लिमिटेड' ने हिंदी पत्रकारिता को विश्वव्यापी सूचना के अकूत भंडार से सम्बद्ध कर दिया। ऑनलाइन समाचार पत्रों से आगे बढ़कर आजकल (इलेक्टॉनिक) ई – पेपर (ई–अखबार) आ चुके हैं, जिसमें हर क्लिक पर अखबार का एक नया पेज खुलता जाता है और हम समाचार पढ़ सकते हैं। ऑनलाइन न्यूज पेपर और ई – पेपर में मुख्य अंतर यह है कि ऑनलाइन न्यूज पेपर में मुद्रित अखबार को इंटरनेट पर उपलब्ध करा दिया जाता है, जबकि ई – पेपर में इंटरनेट पर ही खबरों को पृष्ठवार मुद्रित किया जाता है।

1997 ई॰ में अमेरिका में सबसे पहले ई – अखबार आया। आज भारत में निकनेट के द्वारा बहुत से ई – पत्र और पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। 2007 ई॰ से प्रकाशित होने वाली 'प्रतिलिपि' अथवा विदेशों में बसे प्रवासी भारतियों द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाएं भारत दर्शन, सरस्वती, पत्र, गर्भकाल , बसंत आदि सभी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। निःसंदेह विश्व को एक सूत्र में बांधने वाला इंटरनेट मानव जाति के लिए बहुत उपयोगी है। यूनेस्को पब्लिकेशन के सम्बन्ध में मैक ब्राइड ने कहा था – Many Voices one world. उसी विचार को विस्तार देते हुए रॉय मैथयू लिखते हैं – It is no more voices and one world but millions of voices and one cyber world.

पत्रकारिता के क्षेत्र में नवीनतम रूप 'ब्लॉग' का है जिस पर युवा, चिंतक हर मुद्दे पर अपनी बेबाक राय प्रस्तुत करते हैं। हिंदी में नए – नए सर्च इंजिन, वेबसाइट और सॉफ्टवेयर का विकास होता जा रहा है, जिससे हिंदी पत्रकारिता सुगम और प्रभावी रूप से वैश्विक धरातल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। निसंदेह सूचना तकनीक के प्रभाव से ही पत्रकारिता का यह वृहत और व्यापक स्वरूप सम्भव हो रहा है। इस प्रकार सूचना तकनीक का विकास, अनुसंधान, अविष्कार और प्रयोग पत्रकारिता और उसके स्वरूप को आवश्यक और उपादेय रूप से प्रभावित करता है।

संदर्भ

1 डॉ॰ पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियां, पृष्ठ 31
2 कृष्ण विहारी मिश्र, हिंदी पत्रकारिता, पृ॰ 70
3 डॉ॰ अर्जुन तिवारी, जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता, पृष्ठ 128
4 डॉ॰ अर्जुन तिवारी, जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता, पृष्ठ 129
5 रमेश गौतम (संपादक), रचनात्मक लेखन, पृष्ठ 165
6 डॉ॰ अर्जुन तिवारी, जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता, पृष्ठ 241
7 मार्टिन जी मोलोनी, पत्रकारिता पर सूचना तकनीक का प्रभाव, डबलिन सिटी यूनिवर्सिटी
8 डॉ॰ पृथ्वीनाथ पाण्डेय, पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियां, पृष्ठ 11
9 रॉय मैथयू, (विशेष संवाददाता, द हिन्दू) इमर्जिंग ट्रेंडस इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी, 25 सितम्बर 1997 को केरल विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोधपत्र।